दोहा

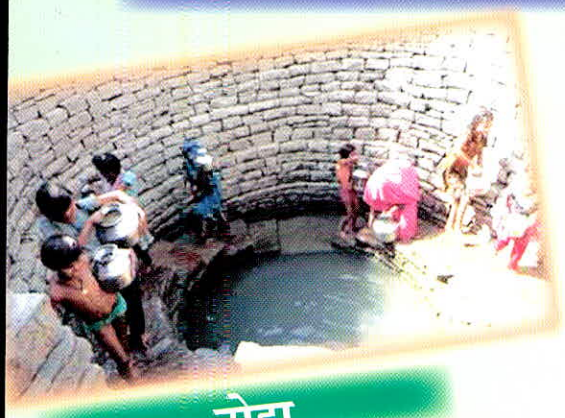

दोहा

सूखे कुएं तालाब, नलों में आया पानी ।
कस्बे शहर, देहात सभी की यही कहानी ।।

आया सावन मास झूमकर बरसा पानी ।
ओढ़ लिया धरती ने देखो चूनर धानी ।।

रहे धरा पर युगों-युगों तक निर्मल पानी ।
छोड़ विनाश पकड़ ले मानव डगर सुहानी ।।

एक दम सही आज भी है रहिमन की बानी ।
ढूंढ़ रहा चूना, मोती और मानव पानी ।।

नहीं हाथ में दूध और न ही पानी ।
कोल्ड ड्रिंक्स देकर अब तो बहलाती नानी ।।

सृष्टि सृजन के समय भरा था चहुँदिशा पानी।
जब आयेगा प्रलय बहुत उफनेगा पानी ।।

हे मानव तू अगर सही में सच्चा ज्ञानी ।
बच जायेगा तू भी अगर बचा ले पानी ।।

लगा पेड़ और बचा पेड़ मानव अज्ञानी ।
नहीं सकेगा रोक बांध बरखा का पानी ।।

हाइकू

देखो बरगद
ऐसी जड़ें
जैसे पांव अंगद

देख सिरसा
लकड़हारा
बहुत विहंसा

हरी नीम
इतनी विशाल
जैसे भीम

देख कटहल
मुस्कराया
संग बडहल

घना पीपल
इसकी छाया
कितनी शीतल

गिरी गूलर
आ गये
खाने सूकर

देखो पाकड़
जंगल में
सबसे धाकड़

टपका महुआ
टोकरी ले
पहुंचा बबुआ

खिले पलाश
जग गई
बसन्त की आस

पीले बेल
कांटों संग
रहे खेल

देख कचनार
लगा कि
आ गई बहार

खाओ जामुन
भागेगी
मधुमेह डायन

ऊँची चीड़
पक्षी बनाते
इसपे नीड़

खिले सेमल
बिरही को
करते बेकल

खिले अमलतास
जेठ में देते
भीनी सुवास

खाओ बेर
थोड़ी नहीं
एक सेर

झूमे गुलमोहर
झेल तपिश
चारों ओर

फले चिलविल
गुच्छा-गुच्छा
झिलमिल-झिलमिल

बौरे आम
लग गये
बगिया के दाम

जंगल जलेबी
है भली
लगती फरेबी

शातिर बबूल
पग पग
बोता शूल ।

भेंट

मैं जानता हूं कि जिस दिन
मानव पूर्णतः विकसित हो जायेगा
उस दिन से उसे
निर्मल जल, मलय पवन
फलों की सुगन्ध और
रिश्तों के गर्माहट की
जरूरत नहीं रहेगी।
फिर भी मेरा मन करता है कि
निर्मल जल के कुछ स्त्रोत
सुरक्षित घोषित कर दूं
फूल की कुछ अच्छी प्रजातियों को
बैंक लॉकर में जमा कर दूं
पूरवा पवन के कुछ झोंकों को
कश्मीर की वादियों में छिपा दूं
तथा अपनी माँ का आंचल
खूब मजबूती से पकड़ लूं
जाने क्यूं मेरा मन करता है कि
आने वाली पीढ़ियों के लिए
कुछ भेंट कहीं छिपा दूं।

संपर्क करें:
अनुराग मिश्र 'गैर'
10 - स्वप्नलोक कॉलोनी
लखनऊ - 226028 (उ0प्र0)
मो.न. - 9412427884
ई-मेल - anuraggair@gmail.com